नयी कविता का शिल्प

डॉ. नरेन्द्र सिंह
प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

सारांश :-

"नयी कविता ने जीर्ण, जर्जर और बासे शिल्प के समस्त उपकरणों का परित्याग कर दिया। विषय-वस्तु और रूप-सज्जा के लिए उसने जो उपकरण प्रयोग किये वे उसे पिछली काव्यशिल्प की परम्पराओं से बिलकुल अलग कर देते हैं 'आज का कवि अपनी रचना के लिए सर्वाधिक नये काव्य रूप का प्रयोग कर रहा है। उसने कुछ ऐसी रचना विधा को जन्म दे डाला है जिससे प्राचीन काव्य शास्त्रों के अभ्यासी कविता तक मानने को तैयार नहीं हैं। नया कवि नयी वस्तु को ग्रहण और प्रेषित करता हुआ शिल्प के प्रति कभी उदासीन नहीं रहा है, क्योंकि वह उसे प्रेषण से काटकर अलग नहीं करता है। नयी शिल्प दृष्टि उसे मिली है।

मुख्य शब्द- शिल्प, जीर्ण, अनुगामिनी, कविता।

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि प्रयोगवाद तथा नयी कविता को समीक्षक मुख्यतः एक शिल्पगत आन्दोलन मानते है। ''युग के यथार्थ और विवेक को ध्वनित करने वाली यह काव्यधारा अपने रूप विधान की दृष्टि से सर्वाधिक चर्चा और विवाद का विषय रही है। शिल्प के बारे में अज्ञेय लिखते हैं कि इन नामों की इतनी चर्चा पहले नहीं होती थी। पर वह इसीलिए कि उन्हें एक स्थान दे दिया था जिसके बारे में बहस नहीं हो सकती थी। यों 'साधना' की चर्चा होती थी, और साधना अभ्यास और मार्जन का ही दूसरा नाम था। बड़ा कवि वाक् सिद्ध होता था, और भी बड़ा कवि 'रससिद्ध' होता था। आज 'वाक शिल्पी' कहलाना अधिक गौरव की बात समझी जा सकती है क्योंकि शिल्प आज विवाद का विषय है। यह चर्चा उत्तर छायावाद काल से ही अधिक बढ़ी, जबकि प्रगति सम्प्रदाय ने शिल्प, रूप, तन्त्र आदि सब को गौण कह कर एक ओर ठेल दिया, 'और शिल्पी' एक प्रकार की गाली समझा जाने लगा। इसी वर्ग ने नयी काव्य प्रवृत्ति को यह कहकर उड़ा देना चाहा है कि वह केवल शिल्प का रूप विधान का आन्दोलन है, निरा फार्मेलिज्म है। पर साथ-साथ उसने यह भी पाया है, कि शिल्प इतना नगण्य नहीं है, कि वस्तु से रूपाकार को बिल्कुल अलग किया ही नहीं जा सकता, कि दोनों का सामंजस्य अधिक समर्थ और प्रभावशाली होता है, और इसी अनुभव के कारण धीरे-धीरे वह भी मानो पिछवाड़े से आकर शिल्पाग्रही वर्ग में आ मिला है। बल्कि अब यह भी कहा जाने लगा है कि 'प्रयोगवाद' के जो विशिष्ट गुण बताये जाते थे उनका प्रयोगवाद ने ठेका नहीं

लिया -प्रगतिवादी कवियों में भी वे पाये जाते हैं। वास्तव में नयी कविता ने कभी अपने को शिल्प तक सीमित रख... नहीं चाहा, न वैसी सीमा स्वीकार की। नया कवि नयी वस्तु को ग्रहण और प्रेषित करता हुआ शिल्प के प्रति क... उदासीन नहीं रहा है, क्योंकि वह उसे प्रेषण से काटकर अलग नहीं करता है। नयी शिल्प दृष्टि उसे मिली है। "भाषा एक सामाजिक साधन है। उसकी सार्थकता ही यह है कि वह व्यक्ति के मन्तव्य को समाज पर प्रकाशित कर सके अतएव उसका प्रयोग सामाजिक ही हो सकता है, वैयक्तिक नहीं।"[2] नूतन भावबोध और शैली शिल्प के नूतन संस्कारों से युक्त नयी प्रतिभाओं को आधुनिक काव्य मंच पर ले आने का श्रेय 'नयी कविता' को दिया जाता है, दिया जाना चाहिए। प्रयोग के आग्रह से आगे बढ़कर नये जीवन सन्दर्भो में विकसित हुई काव्य चेतना को रूपायित और प्रतिष्ठित करने में नये कवियों के इस 'सहकारी प्रयास' ने ऐतिहासिक महत्व का काम किया। नयी कविता की पहली ... नवीनता-दृष्टिकोण और विषय वस्तु की नवीनता, रचना और विधान और सृजन की नवीनता। समसामयिक युग के यथार्थ से अनुप्राणित नयी भावभूमि और रचना शिल्प के अतिरिक्त-किन्तु भावभूमि, रचना शिल्प और नये मूल्यों की दृष्टि से किसी भी युग में ऐसे नवीन क्रांतिकारी कदम शायद कभी नहीं उठाये गये। नयी कविता का सृजन शिल्प विषय-वस्तुत की नवीनता के अनुरूप नयी दिशाओं में विकसित हुआ है। नये कवियों ने इस दृष्टि से भी कई महत्वपूर्ण प्रयोग किये है। चेतना की परिधि के विस्तार तथा कवि व्यक्तित्व के विकास एवं स्वातंत्र्य का परिणाम काव्य के रूप पर पड़ना अनिवार्य है और उचित भी क्योकि रूप विधान सदा युग विशेष की मनः स्थिति को प्रतिबिम्बित करता आया है। परम्परागत अनुर्वर तथा कुठित माध्यम से नवीन अनुभूतियों को अधिक समय तक व्यक्त नहीं किया जा सकता। "छन्द के संबंध में नयी कविता में जो प्रयोगवाद की ही विकास है छन्द संबंधी विशेष अंतदृष्टि का परिचय मिलता है। अंत की लय, वृतगन्धी गद्य आदि हिन्दी कविता के इतिहास में पहली बार नयी कविता के दौर में ही सामने आये।"

ऐसे लोगों की संख्या अपेक्षाकृत कम रही, जिन्होंने नयी कविता की भावभूमि को, उसकी अन्तर्वर्ती चेतना तथा शिल्प विधि को ठीक तरह से समझा और नये युगानुकूल सृजन का पथ प्रशस्त किया है। नये युगबोध की अभिव्यक्ति, नवीन यथार्थ विषयों के अंगीकरण तथा नयी शिल्प विधि के न्याय के कारण नयी कविता का स्वरूप कुछ नया होना था। दूसरी ओर रचना की विवेक तथा व्यंजनापूर्ण नूतन पद्धतियों का विकास करते हुए काव्य के अनाहत अर्थ-गर्भित स्वरूप को अधिक गौरव प्रदान किया। विषय, दृष्टिकोण और सृजन शिल्प की नवीनता के कारण 'नयी कविता' सच्चे अर्थो में नयी है। शिल्प की दृष्टि से उसने जीर्ण, जर्जर तथा बासी प्रतीत होने वाले समस्त उपादानों का परित्याग किया है। युग के यथार्थ और विवेक को ध्वनित करने वाली यह काव्य धारा अपने रूप विधान की दृष्टि से सर्वाधिक चर्चा और विवाद का विषय रही है। रूप के क्षेत्र में नयी कविता विषय वस्तुत की अनुगामिनी है। उसका यथार्थोन्मुख सौन्दर्य बोध, स्वतंत्र-विवेकपूर्ण नये मनुष्य की प्रतिष्ठा का उसका संकल्प और समसमायिकता का आग्रह उसके सृजन शिल्प में भली भाँति प्रतिविंबित हुआ है। नयी भाव सामग्री को प्रेषित करने के लिये नये छन्द विधान तथा नये अलंकरण उपादानों की खोज की है। उसने भाषा को नयी भंगिमा दी है, और शब्दों को नया संस्कार। नयी कविता के विरोधियों ने उसे गद्य कहा। वास्तव में कविता के लिए 'तुक' नहीं अनुभूतियों का आवेग अपेक्षित है।

इस कविता ने छन्द रचना की पूर्व प्रचलित पद्धतियों को पूर्णतया अस्वीकार करते हुए मुक्त छन्द के नूतन रचना विधान को अंगीकार किया है। नयी कविता ने अर्थगत आन्तरिक लय पर ध्यान दिया। अप्रस्तुत योजना, प्रतीक तथा बिम्ब विधान की दृष्टि से नयी कविता और भी नयी है। नयी कविता अब स्थापित हो चुकी है। अनेक नये कवि मानने लगे हैं कि उसकी एक निश्चित संवेदना प्रणाली, निश्चित बिम्ब और प्रतीक, निश्चित भाषा एवं निश्चित आकार बन गया है। नयी कविता की प्रयोगशीलता का पहला आयाम भाषा से संबंध रखता है। निस्संदेह जिसे अब 'नयी कविता' की संज्ञा दी जाती है वह भाषा संबंधी प्रयोगशीलता को वाद की सीमा तक नहीं ले गयी है– बल्कि ऐसा करने को अनुचित भी मानती रही है। यह मार्ग प्रपद्यवादी ने अपनाया जिसने घोषणा की कि 'चीजों' का एक मात्र सही नाम है 'और' यह (प्रपद्यवादी कवि) प्रयुक्त प्रत्येक शब्द और छंद का स्वयं निर्माता है। "प्रयोग सभी काल के कवियों ने किए हैं यद्यपि किसी एक काल में किसी विशेष दशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक ही है। किन्तु कवि अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों का अन्वेषण करना चाहिए जिन्हें अभी तक नहीं किया गया, या जिनको अभेद्य मान लिया गया है।"[4] 'एकमात्र सही नाम' वाली स्थापना को इस तरह मर्यादित करने का यह अर्थ नहीं है कि किसी भी शब्द का सर्वत्र, सर्वदा सभी के द्वारा ठीक एक ही रूप में व्यवहार होता है– बल्कि यह तो तभी होता है जब कि वास्तव में एक चीज का एक ही 'नाम' होता और एक नाम की एक ही चीज होती। प्रत्येक शब्द का प्रत्येक समर्थ उपयोक्ता उसे नया संस्कार देता है। इसी प्रकार शब्द 'वैयक्तिक प्रयोग' भी होता है और प्रेषण का माध्यम भी बना रहता है, दुरूह भी होता है और बोधगम्य भी, पुराना परिचित भी रहता है और स्फूर्ति-प्रद अप्रत्याशित भी।

नयी कविता में भाषा के प्रति अत्याधिक सचेतता का परिचय दिया गया। प्रयोगवादी कवियों के सम्मुख भाषा को लेकर जो सबसे बड़ी समस्या थी वह साधारणीकरण और संप्रेषण की समस्या थी। इन्होंने अनुभव किया कि पुराने उपमानों और प्रतीको के देवता कूच कर गये हैं उसी प्रकार जिस प्रकार अधिक घिसने से बर्तनों का मुलम्मा छूट जाता है। यह बात प्रपद्यवादियों ने भी कही- शब्दों की स्वीकृत संगतियों व्यवहार में घिस-पिछ जाने के कारण, व्यंजक नहीं होती। अपने समय में प्रत्येक सजग कवि का प्रयास होता है कि जो व्यक्ति का अनुभूत है, उसे समष्टि तक कैसे उसकी संपूर्णता में पहुँचाया जाये। कविता का भविष्य सामाजिक संघर्ष के भविष्य से जुड़ा है। जिस तरह मानव का इतिहास वंचित और संपन्न के संघर्ष से आगे बढ़ा है, उसी तरह कला और संस्कृति का भी। कला और संस्कृति तो सामाजिक स्थितियों और स्थान के द्वन्द से आकृति पाकर गतिशील होते हैं।"[5] पर शब्द अपना अर्थ क्यों खो देते है? यह इसलिए होता है कि समूह संस्कृति का सबसे पहला आक्रमण होता है शब्दों के नुकीलेपन पर। बार-बार पुनरावर्तन से और एक ही प्रकार के पुनरावर्तन से शब्दों की कोर मर जाती है और इतनी जल्दी शब्द अपना जामा बदलने लगते हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल हो जाता है। नये कवियों ने भाषा को लेकर तरह-तरह को प्रयोग किये। यही कारण है कि विभिन्न कवियों की भाषा की प्रकृति में परस्पर जितना अंतर और वैषम्य नयी कविता में है उतना हिन्दी कविता मे पहले कभी नहीं था। "नई कविता ने जिस कवि के व्यक्तित्व को नवीनता का सच्चा संवाहक मानकर प्रतिष्ठित किया उसमें सामाजिक दायित्व से युक्त व्यक्ति चेतना अनिवार्य मानी गई है और नए मनुष्य की धारणा का

भी यह आधारभूत तत्व है। फिर जीवन और उसकी गहराई कथाकार के लिए सामाजिक संदर्भ की अपेक्षा गौण या अप्रमुख ही होगी ऐसा ही नहीं कहा जा सकता।''[6] हम अपने अर्थो को रोज जिन सन्दर्भों में जीते हैं, उनके साथ अगर हमने अंग्रेजी शब्द जोड़ लिये हैं, तो कविता में उनके बिना काम भी कैसे चलेगा? या तो कवि उन सन्दर्भों से कट जायेगा, या सन्दर्भो में बँधा पाठक कवि से कट जायेगा । शब्द चयन की दृष्टि से नयी कविता ने खड़ी बोली काव्य भाषा को विस्तार दिया है, उसमें वैविध्य का सूत्रपात किया है। उसे आंचलिकता प्रदान की है। नयी कविता में शब्द चयन की कसौटियाँ बदल गयी हैं। नया कवि शब्दों को गुण या अलंकारों को दृष्टि में रखकर नहीं चुनता बल्कि अर्थ-व्यंजना को दृष्टि में रखकर चुनता है। नयी कविता की भाषा अभिजात या कलापूर्ण नहीं है। वह अत्यन्त अनौपचारिक और व्यवहारिक है। यथार्थ के स्तर पर प्रतिष्ठित खड़ी बोली काव्य के इतिहास में पहली बार नयी कविता के कवि ने भाषा के सर्वथा स्वतन्त्र और निजी व्यक्तित्व को मान्यता और गौरव प्रदान किया है। नयी कविता का कथ्य अत्यन्त सीधा (डायरेक्ट) और बिना झमेलों अथवा झालरों वाला है। ऐसा ही भाषा है। द्विवेदीयुगीन सपाट अभिधात्कता नहीं, छायावादी स्फीतिमयी लाक्षणिक भंगिमा कहती। नयी कविता का कवि जो कहता है वह अभिप्रेत अर्थ देने वाली भाषा कहता है। नयी कविता में जनपदीय शब्द, प्रान्तीय पर्याय, प्रादेशिक मुहावरे, स्थानीय प्रयोग, लटके (मैनरिज्म), (आधे वाक्य पैरन्थेसिस) आदि का प्रयोग अत्यन्त निस्संकोच रूप से हो रहा है।

संदर्भः

1. डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, समकालीन हिन्दी कविता-राजेश प्रकाशन, दिल्ली 1972, I-P-60
2. डॉ. नगेन्द्र, विचार और विवेचन-नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1974, P-135
3. डॉ. क्रांतिकमार, नयी कविता- म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1972 I-P-271
4. अज्ञेय, तार सप्तक-भारतीय ज्ञानपीठ ,1995 P-222
5. कमला प्रसाद, दरअसल - साहित्यवाणी, इलाहाबाद, 1980, I-P-159
6. डॉ. जगदीश गुप्त, नई कवितारूस्वरूप और समस्यायें-ज्ञानपीठ, 1971 I-P-272

❖ ❖ ❖